"भूषण का युगबोध"

महाकवि भूषण रीतिकाल के रीतिबद्ध परम्परा के कवि हैं। भूषण रीतिकाल के एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने रीतिकालीन शृंगार भावना के स्थान पर वीर रस प्रधान काव्य की रचना की है। उन्होंने महाराज शिवा जी एवं बुन्देला वीर छत्रसाल की प्रशंसा में तीन काव्य ग्रन्थों— 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी', 'छत्रसाल दशक' की रचना की। इन ग्रन्थों के अलावा अलंकारशास्त्र के दो ग्रन्थों— अलंकार प्रकाश एवं छन्दोहृदय प्रकाश की रचना भूषण ने की है। भूषण वीर रस के ओज से सम्पन्न एक राष्ट्र कवि थे। उनके काव्य में राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान है। भूषण ने उन्हीं राजाओं की प्रशंसा में रचनाएँ की हैं जो जनकल्याण में सन्नद्ध रहे तथा हिन्दुओं के राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा की। भूषण अपने आश्रयदाताओं के केवल कोरे प्रशंसक नहीं हैं, बल्कि धर्म संस्थापक, जननायकों के प्रशंसक हैं। भूषण के काव्य की प्रशंसा करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है— "शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता। वे आश्रयदाताओं की प्रशंसा की प्रथा के अनुसरण मात्र नहीं हैं, इन दो वीरों का जिस उत्साह के साथ

सारी हिन्दू जनता स्मरण करती है, उसी की व्यंजना भूषण ने की है।"

'शिवराज भूषण' एक विशालकाय काव्य रचना है, जिसमें 385 पद्य हैं। इसमें एक ओर अलंकारों के लक्षणों का निरूपण हुआ है, तो वहीं दूसरी ओर उन अलंकारों के उदाहरण के रूप में शिवाजी के शौर्य एवं पराक्रम का वर्णन किया गया है। 'शिवा बावनी', जैसा कि नाम से ही प्रतीत है, 52 कवित्तों में शिवाजी के शौर्य, पराक्रम आदि का ओजपूर्ण वर्णन है। 'छत्रसाल दशक' में भूषण ने केवल दस कवित्तों में बुन्देला वीर छत्रसाल के शौर्य का वर्णन किया है। 'शिवराज भूषण' में कवि ने शिवाजी के जन्म से लेकर 'हिन्दू पद पादशाही' की स्थापना तक जितनी भी ऐतिहासिक घटनाएँ शिवाजी के जीवन से सम्बन्धित हैं उनका ओजपूर्ण भाषा में वर्णन किया है। इन घटनाओं का वर्णन करते हुए भूषण ने अपने युगबोध का परिचय दिया है तथा तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति का विशद चित्रण किया है। कवि भूषण ने शिवाजी को राम, कृष्ण, विष्णु एवं शिव का अवतार घोषित करते हुए औरंगजेब के अत्याचारों से पीड़ित जनता का उद्धारक एवं मुक्तिदाता बताया है। भूषण ने औरंगजेब के क्रूरतापूर्ण व्यवहार का उल्लेख करते हुए बताया है कि उस समय हिन्दुओं के देव स्थानों को गिराया जाता था, देव मूर्तियाँ तोड़ दी जाती थी तथा मन्दिरों को गिराकर वहाँ मस्जिदें बना दी जाती

थीं। हिन्दुओं के पूज्य पुरुषों, महात्माओं को सताया जाता था तथा वर्ण व्यवस्था को मिटा दिया जाता था। इस स्थिति का चित्रण भूषण ने अपने इस कवित्त में किया है —

"देवल गिरावते फिरावते निसान अली,
ऐसे समै राव-रानें सबै गए लबकी।
गौरा गनपति आय, औरंग को देखि ताप,
अपने मुकाम सब मारि गए दबकी॥
पीरा पयगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देत,
सिद्ध की सिधाई गई, रही बात रबकी।
कासी हू की कला गई, मथुरा मसीत भई,
शिवाजी न होतो तो सुनति होती सबकी॥"

भूषण ने औरंगजेब के धार्मिक अत्याचारों को देखा था। वह तथा अन्य कट्टर मुल्ला-मौलवी हिन्दुओं की चोटियाँ कटवा रहे थे, जनेऊ उतरवा रहे थे, ऐसे समय महाराज शिवाजी जैसे जननायक की आवश्यकता थी, जो इन अत्याचारों पर अंकुश लगाकर आततायियों का दमन कर सके। इसीलिए भूषण ने शिवाजी की प्रशंसा करते हुए लिखा है —

"वेद राखे विदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में॥"

इस कवित्त के माध्यम से भूषण ने तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। मुगल शासक बलप्रयोग करके हिन्दुओं की पहचान मिटा रहे थे, उन पर अत्याचार कर

रहे थे तथा उन्हें धर्म भ्रष्ट करके बलपूर्वक मुसलमान बना रहे थे। ऐसे समय में शिवाजी ने हिन्दू धर्म की रक्षा का बीड़ा उठाया और स्वधर्म एवं स्वाभिमान की रक्षा की। भूषण ने ऐसे जननायक की प्रशंसा में जो कविता लिखी, वह जनभावना की सच्ची अभिव्यक्ति है। कविवर भूषण ने तत्कालीन राज्यों एवं उनके अधिपति राजाओं की विभिन्न पुष्पों के रूप में कल्पना करते हुए निम्न छन्द की रचना की है— "कूरम कमल कमधज है कदम्ब फूल,
गौर है गुलाब राना केतकी विराज है।
पाँडरि पँवार, जुटी सोहत है चन्दावत,
बकुल बुन्देला अरु हाडा हँसराज है॥
भूषन भनत मुचकुन्द बड़ गूजर है,
बघेल बसन्त सब कुसुम समाज है।
सबही को रस लैके बैठि न सकत आय,
अलि अवरंगजेब चम्पा सिवराज है॥"

इस कवित्त में भूषण ने शिवाजी को ऐसा चम्पा का फूल बताया है, जिससे औरंगजेब रूपी भ्रमर दूर ही रहता है। भौंरा बाग के सभी फूलों का रस चूसता है पर चम्पा के फूल के पास आने का साहस नहीं करता है। भूषण ने अपने काव्य में कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का भी उल्लेख किया है। एक बार शिवाजी औरंगजेब के दरबार में गए, तब बादशाह ने उनका अपमान करते हुए उन्हें छः हजारी मनसबदारों के पास खड़ा कर दिया। ~~शिवाजी~~ इसपर शिवाजी क्रोध से तमक उठे, उन्होंने बादशाह को सलाम तक नहीं किया। उनका मुख क्रोध से लाल हो गया, जबकि

औरंगजेब का मुख काला पड़ गया तथा सिपाहियों के मुख पीले पड़ गए। शिवाजी की ऐसी धाक मुगल साम्राज्य में थी कि मुगलों की रानियाँ उनके नाम से घबरा जाती थीं। कविवर भूषण ने शिवाजी के इस आतंक के कारण मुगल स्त्रियों की जो दशा होती है, उसका आलंकारिक वर्णन इन पंक्तियों में किया है—

"भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं।
'भूषन' भनत सिवराज वीर तेरे त्रास
नगन उड़ातीं ते वै नगन उड़ाती हैं॥"

वस्तुतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि भूषण के काव्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना विद्यमान है। उनकी कविता में युगबोध जीवन्त रूप में दिखाई पड़ता है। भूषण ने अपनी कविता में जनजीवन का प्रभावी चित्रांकन किया है तथा वह लोकमंगल की भावना से अनुप्राणित है।